समृद्धि के मार्ग का निर्धारण: वित्तीय साक्षरता का महत्व*

स्वामीनाथन जे

श्रीमती दिव्यदर्शिनी आईएएस, प्रबंध निदेशक, तमिलनाडु महिला विकास निगम; श्री शंकर नारायण, सीजीएम, नाबार्ड, चेन्नई; श्री वसीमलाई, कार्यकारी निदेशक, धन फाउंडेशन; एसएलबीसी, तमिलनाडु और पुडुचेरी के संयोजक; श्रीमती उमा शंकर, क्षेत्रीय निदेशक, आरबीआई, चेन्नई; वरिष्ठ बैंकर; वित्तीय साक्षरता परामर्शदाता; वित्तीय साक्षरता केंद्र के सहभागी और समन्वयक; वित्तीय साक्षरता सामुदायिक संसाधन से जुड़े सभी व्यक्तियों; देवियो और सज्जनो, मुझे आज मदुरै में वित्तीय साक्षरता पर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

मदुरै तमिलनाडु के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शहर अपनी समृद्ध विरासत के लिए प्रसिद्ध है, और "संगम" के माध्यम से तमिल भाषा को बढ़ावा देता है, जिससे शहर को प्यार से "संगम वलार्थ नगरम" कहा जाता है।

यह शहर 2,000 वर्ष से भी पहले संत तिरुवल्लुवर की उपस्थिति से भी सुशोभित था। आज के सम्मेलन के संदर्भ में, मैं उनके प्रसिद्ध दोहों में से एक को याद करना चाहूंगा जिसमें राजाओं और लोगों के लिए वित्तीय नियोजन के महत्व को संक्षेप में समझाया गया था।

“ஆகாறு அளவிட்டி தாயினுங் கேடில்லை போகாறு அகலாக் கடை”, (तिरुकुरल सं. 478)

संत अपने कुरल के माध्यम से बताते हैं कि भले ही एक राजा की आय कम हो, लेकिन अगर उसका बहिर्वाह उसकी आय से ज़्यादा नहीं है तो यह उसकी बर्बादी का कारण नहीं बनेगा।

वास्तव में, यह ऋषि की सलाह आज की उपभोक्तावादी अर्थव्यवस्था में और भी अधिक प्रासंगिक है। मिंट अखबार[1] के एक हालिया सर्वेक्षण से पता चलता है कि 50 प्रतिशत भारतीय खरीदार दीर्घकालिक वित्तीय नियोजन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अब उपभोग करना पसंद कर रहे हैं। इसलिए, कम उम्र से ही वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए लोगों, विशेष रूप से युवाओं के बीच वित्तीय नियोजन, बजट और बचत के विचार को स्थापित करने की आवश्यकता है।

वित्तीय साक्षरता[2] विभिन्न वित्तीय अवधारणाओं को जानने और समझने के साथ लोगों को सशक्त बनाती है ताकि वे अपने पैसे के बारे में सही विकल्प चुन सकें और वित्तीय सेवाओं का उचित उपयोग कर सकें।

वास्तव में, समावेशी विकास के विकासात्मक उद्देश्यों को समर्थन देने के लिए वित्तीय साक्षरता प्रमुख है। वित्तीय समावेशन के मांग पक्ष को संबोधित करके, वित्तीय साक्षरता लोगों को औपचारिक वित्तीय उत्पादों और विनियमित वित्तीय प्रदाताओं के लाभों को समझने के साथ-साथ बचत, क्रेडिट, बीमा, पेंशन और प्रेषण में उपयुक्त विकल्प चुनने में सक्षम बनाती है।

सौभाग्यवश, आज भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से विकास कर रही है। हालांकि, इस विकास के समावेशी होने के लिए, यह जरूरी है कि हमारे पास एक वित्तीय प्रणाली हो जो सभी के लिए काम करे। यह उद्देश्य वित्तीय समावेशन की दिशा में आरबीआई द्वारा किए जा रहे सभी प्रयासों के केंद्र में है।

भारत में वित्तीय साक्षरता बढ़ाने के लिए सरकार, वित्तीय संस्थानों, गैर-लाभकारी संगठनों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इसके लिए लक्षित शैक्षिक कार्यक्रमों, जागरूकता अभियानों और अभिनव समाधानों की आवश्यकता होती है जो विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों की विविध आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को पूरा करते हैं।

* वित्तीय साक्षरता पर संगोष्ठी, मदुरै में श्री स्वामीनाथन जे, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का भाषण - 8 अप्रैल 2024

[1] https://www.livemint.com/industry/retail/young-indian-consumers-want-to-live-in-the-moment-says-survey-11700737755534.html

[2] आर्थिक सहयोग और विकास संगठन ने वित्तीय साक्षरता को 'वित्तीय जागरूकता, ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार के संयोजन के रूप में परिभाषित किया है जो मजबूत वित्तीय निर्णय लेने और अंततः व्यक्तिगत वित्तीय कल्याण प्राप्त करने के लिए आवश्यक है'।

इसे स्वीकार करते हुए, 2020-2025 की अवधि के लिए वित्तीय शिक्षा के लिए भारत की राष्ट्रीय कार्यनीति (एनएसएफई) को इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए एक भविष्योन्मुखी फ्रेमवर्क के रूप में तैयार किया गया है। कार्यनीति का '5 सी' दृष्टिकोण निम्नलिखित पर ज़ोर देता है:

i. स्कूलों, कॉलेजों और प्रशिक्षण प्रतिष्ठानों में पाठ्यक्रम में प्रासंगिक सामग्री का विकास,
ii. वित्तीय सेवाएं प्रदान करने में शामिल मध्यस्थों के बीच क्षमता विकसित करना,
iii. वित्तीय साक्षरता के लिए समुदाय-आधारित मॉडल के सकारात्मक प्रभाव का लाभ उठाना,
iv. वित्तीय साक्षरता के लिए उपयुक्त संचार कार्यनीति, और,
v. विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग बढ़ाना।

कार्यनीति का उद्देश्य जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को वित्तीय परिदृश्य की जटिलताओं से निपटने के लिए आवश्यक ज्ञान और उपकरणों से लैस करना है।

अपनी ओर से, भारतीय रिज़र्व बैंक ने वित्तीय साक्षरता के प्रसार के माध्यमों में वृद्धि करने के लिए अनेक उपाय अपनाए हैं। इसने आरबीआई कहता है जैसे विभिन्न जन जागरूकता अभियानों को बढ़ावा दिया है और अपनी वेबसाइट पर वित्तीय साक्षरता सामग्री बनाना और अपडेट करना जारी रखा है। आज, आरबीआई की वेबसाइट पर अंग्रेजी और हिंदी सहित 13 भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में साहित्य उपलब्ध है, जो हितधारकों द्वारा वित्तीय शिक्षा के बारे में जागरूकता के लिए डाउनलोड और उपयोग किया जा सकता है।

वित्तीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति युवा पीढ़ी को आवश्यक धन प्रबंधन कौशल के साथ सशक्त बनाने के महत्व पर भी जोर देती है। इसे ध्यान में रखते हुए, भारतीय रिज़र्व बैंक राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केन्द्र[3] के माध्यम से कक्षा VI से X के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में वित्तीय शिक्षा को एकीकृत करने जैसी विभिन्न पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों के बीच वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा दे रहा है। एनसीएफई की राष्ट्रीय वित्तीय साक्षरता आकलन परीक्षा विश्व स्तर पर स्कूली छात्रों के लिए सबसे बड़ी मुफ्त वार्षिक वित्तीय साक्षरता परीक्षाओं में से एक है[4]।

पिछले वर्ष हमने सरकारी/नगरपालिका स्कूलों के कक्षा VIII, IX और X के छात्रों के लिए वित्तीय साक्षरता पर अखिल भारतीय प्रश्नोत्तरी आयोजित की थी, जिसमें लगभग 52,000 स्कूलों के एक लाख से अधिक छात्रों ने भाग लिया था। हम आरबीआई के 90 साल पूरे होने के जश्न के हिस्से के रूप में इस वर्ष के अंत में कॉलेज के छात्रों के लिए एक अखिल भारतीय प्रश्नोत्तरी की भी योजना बना रहे हैं।

आरबीआई 2016 से हर वर्ष वित्तीय साक्षरता सप्ताह मना रहा है ताकि जनता को विभिन्न महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषयों पर वित्तीय शिक्षा संदेश प्रसारित किया जा सके। इस वर्ष, वित्तीय साक्षरता सप्ताह 26 फरवरी से 1 मार्च के बीच मनाया गया, जिसमें एक सही शुरुआत करें, वित्तीय रूप से स्मार्ट बनें, यह छात्रों और युवा वयस्कों को लक्षित करके यह संदेश देता है कि युवा पीढ़ी को प्रारंभिक चरण में वित्तीय साक्षरता और वित्तीय नियोजन कौशल से लैस करने की आवश्यकता है।

एक दशक से भी अधिक समय पहले, जून 2012 में, आरबीआई ने जिलों में अग्रणी बैंकों को वित्तीय साक्षरता केंद्र स्थापित करने की सलाह दी। इन वित्तीय साक्षरता केंद्रों को वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और जागरूकता अभियानों का संचालन करने की आवश्यकता होती है ताकि लोगों को बुनियादी वित्तीय अवधारणाओं, जैसे बचत, बजट, उधार और बीमा, साथ ही निवेश कार्यनीतियों और सेवानिवृत्ति योजना जैसे अधिक जटिल विषयों के बारे में शिक्षित किया जा सके। मुझे यह

[3] राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केंद्र (एनसीएफई) एक 'गैर-लाभकारी' कंपनी है जिसे भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड, भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण तथा पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण संयुक्त रूप से प्रवर्तित करते हैं।

[4] स्रोत: https://old.ncfe.org.in/NFLAT (अंतिम बार 6 अप्रैल 2024 को एक्सेस किया गया)।

जानकर खुशी हो रही है कि 31 दिसंबर 2023 तक अग्रणी बैंकों ने जिला मुख्यालयों में 1,500 से अधिक वित्तीय साक्षरता केंद्र स्थापित कर लिए। उनके द्वारा आयोजित शिविरों में 30 लाख से अधिक प्रतिभागियों को शामिल किया गया। तमिलनाडु और पुडुचेरी में, 77 वित्तीय साक्षरता केंद्रों ने 1.45 लाख से अधिक प्रतिभागियों को कवर किया।

जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रत्यक्ष पहल के अलावा, रिज़र्व बैंक वित्तीय साक्षरता बढ़ाने के लिए अन्य हितधारकों के साथ भी सहयोग करता है। 2017 में बैंकों और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा शुरू की गई वित्तीय साक्षरता केंद्र (सीएफएल) परियोजना, इस सहयोगी दृष्टिकोण का एक ज्वलंत उदाहरण है, इसे नाबार्ड और आरबीआई द्वारा प्रशासित निधियों से वित्त पोषण सहायता मिलती है। 31 मार्च 2024 तक, देश के सभी ओर के ब्लॉकों को कवर करते हुए 2,406 सीएफएल परिचालित किए गए, जिनमें से 129 तमिलनाडु और पुडुचेरी में हैं।

इन क्षेत्रों में अच्छी प्रगति होने के बावजूद, अभी भी महत्वपूर्ण चुनौतियां और अंतराल हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, मैं पांच प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख करना चाहूंगा।

डिजिटल अंतर को पाटना

जैसे-जैसे वित्तीय सेवाएं तेजी से ऑनलाइन होती जा रही हैं, उन लोगों के वंचित रहने का जोखिम है जिनके पास डिजिटल तकनीक तक पहुंच की कमी है या जो इसका उपयोग करने के तरीके से परिचित नहीं हैं। डिजिटल अंतर को पाटना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि हर कोई आधुनिक वित्तीय प्रणाली में भाग ले सके।

प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग करके, हम वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए इसकी परिवर्तनकारी क्षमता को खोल सकते हैं। यह स्वीकार करते हुए कि कई व्यक्तियों के पास पारंपरिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच की कमी है, लेकिन मोबाइल फोन या अन्य डिजिटल उपकरणों तक उनकी पहुँच है, इसलिए यह अभिनव डिजिटल समाधान के लिए एक साधन प्रस्तुत करता है।

डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए, हमें डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों को अनुकूलित करने की आवश्यकता है जो विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं और क्षमताओं को पूरा करते हैं। ये कार्यक्रम डिजिटल वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म नेविगेट करने और साइबर जोखिमों से बचाने के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं, जिससे व्यक्तियों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में पूरी तरह से भाग लेने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।

क्षमता निर्माण

दूसरे, वित्तीय साक्षरता अभियानों में लगे सलाहकारों की निरंतर क्षमता निर्माण पर पर्याप्त ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि उन्हें वित्तीय उत्पादों और ग्राहक संरक्षण पर नवीनतम और प्रासंगिक जानकारी से रूबरू रखा जा सके।

वित्तीय परिदृश्य लगातार विकसित हो रहा है, इसलिए सलाहकारों के लिए सटीक और समय पर मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम होने के लिए अपडेट रहना महत्वपूर्ण है। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन सलाहकारों को उनके ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के अवसर प्रदान कर सकता है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हुए, हम सलाहकारों को ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल, वेबिनार और डिजिटल संसाधनों तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं।

अधिक सहयोग

तीसरा पहलू जिस पर मैं प्रकाश डालना चाहता हूं वह है अधिक सहयोग की आवश्यकता। विभिन्न हितधारकों जैसे अग्रणी जिला प्रबंधक, जिला विकास प्रबंधक, ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, बीसी, किसान क्लबों, पंचायतों, ग्राम स्तरीय पदाधिकारियों आदि के बीच जमीनी स्तर पर तालमेल होना चाहिए। एफएलसी चलाने वाले बैंकों तथा सीएफएल का संचालन करने वाले गैर-सरकारी संगठनों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि जहां तक संभव हो एफएलसी या सीएफएल में सलाहकारों की उपलब्धता में कोई अंतर न रहे ताकि उनके कार्यकलाप सुचारू रूप से संचालित किए जा सकें।

उत्पादन और परिणाम उन्मुख होना

चौथे, मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि सीएफएल और एफएलसी केवल जागरूकता केन्द्र नहीं होने चाहिए बल्कि ठोस और स्थायी परिवर्तन के लिए वास्तविक परिवर्तन को प्रेरक बनाने वाले उत्प्रेरक होने चाहिए। हमें अपने वित्तीय जागरूकता शिविरों और कार्यक्रमों में भाग लेने के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में औपचारिक वित्तीय प्रणालियों में सफलतापूर्वक एकीकृत लाभार्थियों की संख्या जैसे परिणामों की मात्रा निर्धारित करके अपने प्रयासों की प्रभावकारिता का आकलन करने का प्रयास करना चाहिए।

महिलाओं की भूमिका को पहचानना

अंत में और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैं वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने में महिलाओं की भूमिका को मान्यता देना चाहूंगा।

महिलाएं घरों के भीतर बजट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि वे अक्सर दिन-प्रतिदिन के वित्त का प्रबंधन करती हैं, खरीदारी के निर्णय लेती हैं और अपने परिवारों की वित्तीय भलाई सुनिश्चित करती हैं। वे अपने परिवारों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधनों को प्रभावी ढंग से आवंटित करने में माहिर हैं। वे अक्सर परिवार के बजट को अनुकूलित करने और बचत को अधिकतम करने के लिए विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं के साथ बेहतर मोल-भाव करती हैं।

यह कहा जाता है कि 'एक आदमी को शिक्षित करो, तो तुमने केवल एक व्यक्ति को शिक्षित किया । यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।' जब महिलाएं शिक्षित और वित्तीय रूप से साक्षर होती हैं, तो वे अक्सर अपने परिवारों के भीतर प्राथमिक शिक्षकों के रूप में काम करती हैं। इसलिए, कृपया सुनिश्चित करें कि आपके पास महिलाओं की वित्तीय साक्षरता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किए गए कार्यक्रम हैं।

निष्कर्ष

अंत में, यह स्पष्ट है कि वित्तीय साक्षरता केवल व्यक्तिगत सशक्तिकरण का मामला नहीं है बल्कि समावेशी वृद्धि और सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसलिए, यह जरूरी है कि हम वित्तीय साक्षरता बढ़ाने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के प्रयासों को प्राथमिकता देना जारी रखें।

वित्तीय शिक्षा के लिए भारत की राष्ट्रीय रणनीति में उल्लिखित बहुआयामी दृष्टिकोण हमारे उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है। लक्षित पहलों और साझेदारियों के माध्यम से, हम जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को सोच समझ के वित्तीय निर्णय लेने और अधिक वित्तीय कल्याण प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और उपकरणों से लैस कर सकते हैं।

जैसा कि हम अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाते हैं, डिजिटल विभाजन को पाटना, सलाहकारों के लिए चल रहे क्षमता निर्माण को सुनिश्चित करना, हितधारकों के बीच अधिक सहयोग को बढ़ावा देना और वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानना ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर निरंतर ध्यान और निवेश की आवश्यकता है।

नवाचार और सहयोग के अवसरों के रूप में इन चुनौतियों को अपनाकर, हम एक अधिक समावेशी और आघातसहनीय समाज बनाने के लिए वित्तीय साक्षरता की परिवर्तनकारी क्षमता का दोहन कर सकते हैं। आइए हम एक साथ मिलकर एक ऐसे भविष्य की दिशा में काम करें जहां हर किसी के पास अपने वित्तीय लक्ष्यों और आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए ज्ञान, कौशल और अवसर हों। धन्यवाद।